तत्व प्रेम कर मम अरू तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा ।।
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ।।
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगनप्रेम तन सुधि नहिं तेही ।।
कह कपि हृदयँ धीर धरू माता। सुमिरू राम सेवक सुखदाता ।।
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु कदराई ।।

दो०-निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदयँ धीर धरू जरे निसाचर जानु।। 15 ।।

जौं रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहिं बिलंबु रघुराई ।।
राम बान रबि उएँ जानकी। तम बरूथ़ कहँ जातुधान की ।।
अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ।।
कछुक दिवस जननी धरू धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ।।
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ।।
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना। जातुधान अति भट बलवाना ।।
मोरें हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ।।
कनक भूधराकर सरीरा। समर भयंकर अतिबल बीरा ।।
सीता मन भरोस तब भयऊ। पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ।।

दो०-सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धिबिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरूड़हि खाइ परम लघु ब्याल।। 16 ।।

मन संतोष सुनत कपि बानी। भगति प्रताप तेज बल सानी ।।
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना ।।
अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ।।
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ।।
बार बार नाएसि पद सीसा। बोला बचन जोरि कर कीसा ।।
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता ।।
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देख सुंदर फल रूखा ।।
सुन सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी ।।
तिन्ह कर भय माता मोहि नाही। जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ।।

दो०-देखि बुद्धिबल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु।
रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु।। 17 ।।

चलेउ नाइ सिरू पैठेउ बागा। फल खाएसि तरू तौरें लागा ।।
रहे तहाँ बहु भट रखवारे। कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ।।
नाथ एक आवा कपि भारी। तेहिं असोक बाटिका उजारी ।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान